भारतीय जनता पार्टी की नई दिल्ली में 3 मार्च, 2013 को आयोजित राष्ट्रीय परिषद की बैठक में भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी का भाषण

अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह जी, सुषमा जी, अरुण जी, भाजपा/एनडीए शासित राज्यों के मुख्यमंत्री और मंत्रीगण और राष्ट्रीय परिषद के अधिवेशन में उपस्थित सभी अन्य प्रिय सहयोगी

मैं आप सभी के साथ श्री राजनाथ जी को बधाई देने के लिए शामिल हुआ हूं जिन्हें हमने हाल ही में अपनी पार्टी का अध्यक्ष चुना है। पार्टी अध्यक्ष के रुप में यह उनका दूसरा कार्यकाल है। वे काफी लंबे समय से पार्टी के वरिष्ठ नेता रहे हैं। उन्होंने पर्याप्त राजनीतिक और प्रशासनिक अनुभव हासिल किया है।

मैं श्री राजनाथ जी के उज्जवल भविष्य की कामना करता हू। और मैं पूरे पार्टी संगठन से आग्रह करता हूं कि वह आने वाले महीनों में सामने खड़े होने वाले चुनौतीपूर्ण कार्यों और संघर्षों का मुकाबला करने के लिए उनके नेतृत्व में पार्टी में नया जोश भरें।

देश में साधारण तौर पर केन्द्र में कांग्रेस के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार के प्रति रोष और विरोध का माहौल है। जनता का ऐसा मूड कई कारणों से बना है लेकिन इनमें सबसे प्रमुख बात जो समाज के सभी वर्गों के मन में बैठ गई है, वह यह है कि आजाद भारत के इतिहास में यह अब तक की सबसे भ्रष्ट सरकार है।

यूपीए–1 की दो विशेषताएं थीं बेतहाशा मंहगाई और वोट के बदले नोट की बदनाम घटना।

यूपीए–2 की खूबियां हैं हजारों करोड़ रुपये का अब तक का जबरदस्त भ्रष्टाचार।

भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे के आंदोलन को लोगों का व्यापक समर्थन इस बात का संकेत था कि जनता क्या चाहती है। दुर्भाग्यवश भाजपा जन भावना को समझने और उस पर पर्याप्त तरीके से प्रतिक्रिया व्यक्त करने में विफल रही। इन दोनों मुद्दों पर पार्टी ने सरकार को संसद के दोनों सदनों में जबरदस्त तरीके से घेरा। लेकिन कुल मिलाकर बाहर यहां तक कि हमारे समर्थकों को भी निराशा हाथ लगी। बिना किसी औपचारिकता के हमें इस बात को मानना होगा कि कर्नाटक में स्थिति से निपटने में हमारे ढुलमुल सिद्धांतहीन प्रबंधन के कारण हमारी छवि को काफी नुकसान पहुंचा है। हम भूल गए कि लोग किसी भी राजनैतिक दल का आंकलन उसकी भ्रष्टाचार से निपटने की प्रतिबद्धता से करते हैं न कि उसकी घोषणाओं से बल्कि उसकी कार्यप्रणाली और जरुरत पड़ने पर उसकी दंडात्मक

कार्रवाइयों से करते हैं। भ्रष्टाचार के मुद्दे पर पार्टी को हर हालत में कड़े नियमों का पालन करना चाहिए।

मित्रो, जब 1980 में भाजपा बनी, श्री वाजपेयी ने हमें प्रेरणा दी थी कि पार्टी को .....'' एकदम अलग तरह का'' बनाएं। हमने निश्चित तौर पर इस वजह से ख्याति अर्जित की, जिसने भाजपा को आम लोगों के साथ–साथ देशभर के राजननीतिक दृष्टि से जागरुक लोगों का प्रिय बना दिया।

लोग, यहां तक कि हमारे राजनैतिक विरोधी भी भाजपा में अनुशासन की विशिष्ट भावना और सहयोग से काम करने की सराहना करते हैं।

लेकिन इस चाह के विपरीत, भाजपा ने पिछले कुछ वर्षों में अपना आधार तैयार किया है और उसकी छवि यह बन गई है कि वह एक अलग तरह की पार्टी है, जो विविध तरीकों से अपने विचारों को अभिव्यक्त करती है।

किसी भी राजनैतिक संगठन में विचारों में खरे मतभेद होना स्वाभाविक है। उनका स्वागत है। वह उसके स्वस्थ विस्तार और विकास में योगदान करते हैं।

भाजपा में हम इस बात पर गर्व महसूस करते हैं कि हमारी वंशवाद वाली पार्टी नहीं है। हमारी पार्टी आंतरिक लोकतंत्र को महत्व देती है और उसे बढ़ावा देती है। लेकिन हमें इस बात को अवश्य स्वीकार करना होगा कि संगठन के उच्च स्तर पर आंतरिक संबंध आंतरिक लोकतंत्र को बरकरार रखते हैं। अगर आंतरिक अनुशासन के कारण आंतरिक संबंध कमजोर होने की इजाजत दी जाएगी, जो हमेशा से भाजपा और पूर्व में भारतीय जनसंघ का हॉलमार्क रहे हैं, पार्टी की छवि आंतरिक मतभेदों वाले संगठन के रुप में बनने लगती है।

इसलिए मैं श्री राजनाथ सिंह जी से आग्रह करुंगा कि केन्द्र और राज्य स्तरों पर वरिष्ठ नेताओं के सहयोग से इस स्थिति को सुधारने के लिए कड़े कदम उठाएं।

मित्रों, आज देश की राजनैतिक स्थिति सुस्पष्ट संकेत दे रही है, लोग बदलाव चाहते हैं।

भारत की प्रगति में ठहराव स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

सरकार मंहगाई पर अंकुश लगाने में पूरी तरह विफल रही है। इसके विपरीत प्रत्येक नये नीतिगत फैसले खाद्य मुद्रास्फीति को बढ़ा रहे है और अन्य आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं के दाम बढ़ रहे हैं।

राज्य सरकारों के साथ केन्द्र के संबंध कभी इतने खराब नहीं रहे।

कांग्रेस के नेता आर्थिक विकास की गति तेज करने, विकास में असंतुलन समाप्त करने और सुशासन के लिए सुधारों को आगे बढ़ाने के लिए कोई बड़ा और ठोस सुझाव देने में पूरी तरह नाकाम रहे हैं।

खोखले नारों को छोड़कर, कांग्रेस पार्टी और उसकी सरकार भारत के नौजवानों के सपनों, आकांक्षाओं और उनकी रचनात्मक ऊर्जा का इस्तेमाल करने में विफल रही है।

केन्द्र में यूपीए सरकार का खराब प्रदर्शन विभिन्न राज्यों में कांग्रेस सरकार के प्रदर्शन से पूरी तरह मेल खाता है।

अतः यह पूरी तरह स्पष्ट हो गया है कि भारत की जनता यूपीए सरकार से छुटकारा पाना चाहती है।

यूपीए–2 के अपने कार्यकाल के अंतिम वर्ष में प्रवेश करने के साथ ही, जब भी संसदीय चुनावा होंगे, लोगों का ध्यान तेजी से इस बात की तरफ जाएगा कि इसका विकल्प कौन हो सकता है।

कांग्रेस के नेताओं को मुगालता है कि उनकी पार्टी का कोई विकल्प नहीं हैं। लेकिन उनके इस मुगालते कों जनता पूरी तरह खत्म कर सकती है।

तथापि दो सवाल उठते हैंः

1) इस विकल्प का आकार क्या होगा?

2) इस विकल्प का लाभ सुनिश्चित करने के लिए भाजपा को क्या भूमिका निभानी होगी?

इन दोनों सवालों के जवाब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। सबसे पहले हमें समान विचारधारा वाले सभी दलों–एनडीए में शामिल और एनडीए के बाहर वाले– दोनों के साथ मिलकर काम करना होगा–ताकि लोगों को विश्वास दिलाया जा सके कि सुशासन के राजी एजेंडा के साथ उनके सामने एक गैर कांग्रेस विकल्प मौजूद है।

सूरजकुंड में भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी की पिछली बैठक में मेरी टिप्पणी का यही मतलब था। मैंने एनडीए में औरों को भी शामिल करने का विचार आगे बढ़ाया था।

दूसरा, भाजपा को एक गैर कांग्रेस विकल्प का मजबूत, विशाल और प्रमुख घटक बनने के लिए लोगों का दिल जीतने के उद्देश्य से अपने बलबूते एक रणनीति अवश्य तैयार करनी चाहिए।

जैसाकि मैंने कहा, दोनों रणनीतियां एक दूसरे से जुड़ी हैं। दूसरे की खातिर पहले की अनदेखी नहीं की जा सकती।

इस संदर्भ में, मैं दो महत्वपूर्ण बातों को दोहराना चाहता हूं जो मैंने राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सूरजकुंड बैठक में स्पष्ट रुप से कहे थे।

सबसे पहले, हमें सुशासन और विकास का एक एजेंडा तेजी से तैयार करना चाहिए जिसमें (1) अटल बिहारी वाजपेयी के नेत्त्व में एनडीए सरकार के अच्छे कार्यों (2) पंजाब और बिहार सहित भाजपा/एनडीए सरकारों का प्रभावशाली प्रदर्शन (3) कुछ नवीन और नई खोज वाली योजनाओं को शामिल किया जाएं जो लोगों की आकांक्षाओं और कल्पनाओं पर खरी उतरती हों।

दूसरा, भाजपा को विश्वास के साथ अपना दृढ़ मत व्यक्त करना चाहिए कि हम बिना किसी भेदभाव के समान रुप से समाज के प्रत्येक वर्ग की चिंता करते हैं चाहे वह किसी भी धर्म और जाति का हो।

हमारे प्रमुख विचारक पंडित दीनदयाल उपाध्याय हमेशा इस बात पर जोर देते रहे कि हमारे लिए हिन्दुत्व, भारतीयता और भारतीय होना समानार्थक हैं। हमारी भारतीय नागरिकता सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है।

पंडित नेहरु जनसंघ की साम्प्रदायिक सोच की अक्सर आलोचना करते थे। लेकिन अक्तूबर 1961 में मदुरै में एआईसीसी के अधिवेशन में पंडितजी के भाषण के कुछ अंश मैं यहां उद्धृत करना चाहूंगा जिसमें उन्होंने भारतीय संस्कृति की चर्चा की थी और उसे '' रेशम सा मुलायम बंधन जो हमें अनेक तरीकों से जोड़े रहता है'' बताया था।

अपने मदुरै भाषण में, प्रधानमंत्री नेहरु ने कहा था :

''भारत जमाने से तीर्थ यात्राओं का देश रहा है। पूरे देश में आपको बद्रीनाथ, केदारनाथ और अमरनाथ के बर्फीले इलाकों से लेकर नीचे दक्षिण में कन्याकुमारी तक प्राचीन स्थल मिलेंगे। इन तीर्थयात्राओं में कौन सी चीज हमारे लोगों को दक्षिण से उत्तर में और उत्तर से दक्षिण की तरफ खींचती होगी? यह एक देश और एक संस्कृति की भावना है जो इस भावना ने हम सभी को बांधकर रखा है। हमारी प्राचीन पुस्तकों में कहा गया है कि भारत भूमि उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण के इलाकों तक है। एक महान भूमि के रुप में भारत की यह अवधारणा जिसे लोग पवित्र भूमि मानते हैं, बरसों से बनी हुई है और इसने हमें एकसाथ जोड़ा है, चाहे हमारे अलग–अलग राजनैतिक साम्राज्य हैं ओर चाहे हम अलग–अलग भाषा बोलते हैं। इस रेशम से मुलायम बंधन ने हमें अनेक तरीकों से बांधकर रखा है।''

मेरा मानना है कि भाजपा और अल्पसंख्यकों के बीच पारस्परिक समीकरण बदलने चाहिए ताकि भारत के लोकतंत्र, विकास और राष्ट्रीय एकीकरण में मौलिक बदलाव लाया जा सके।

भाजपा को अपने सुशासन और विकास के एजेंडा में अल्पसंख्यकों के प्रति वचनबद्धता के चार्टर को शामिल करने सहित इस दिशा में पहल करनी चाहिए।

मुझे यकीन है कि हम इस प्रयास में सफल होंगे। गोवा में हम ईसाई समुदाय के बड़े वर्ग के दिलों को जीतने में सफल रहे। हमने अपने विरोधियों के इस दुष्प्रचार को धाराशायी कर दिया कि भाजपा अल्पसंख्यकों की शत्रु है। गोवा में हाल के चुनावों में भाजपा की शानदार विजय एक असाधारण उपलब्धि है।

मैं इस संदर्भ में यह जानकर खुशी हुई हैं कि बड़ी संख्या में मुस्लिम नेताओं ने कांग्रेस पार्टी के खुद ब खुद किये जा रहे दुष्प्रचार के स्वभाव को समझना शुरु कर दिया है। इसका एक अच्छा उदाहरण जमायत उलेमा–ए–हिंद के नेता महमूद मदनी की हाल की टिप्पणी है जिसमें उन्होंने गुजरात में भाजपा सरकार के कामकाज की प्रशंसा की है।

जामनगर में सलाया एक छोटा सा मुस्लिम बहुल आबादी वाला कस्बा है। गुजरात नगर निगम के चुनावों में पिछले महीने यहां भाजपा को सुखद आश्चर्य हुआ। 25 वर्ष में पहली बार कांग्रेस को सत्ता से खदेड़ दिया गया। नगर निगम की सभी 27 सीटों पर भाजपा ने विजय हासिल की। इन विजयी उम्मीदवारों में 24 मुसलमान हैं।

अनेक विदेशी सरकारों ने भी गुजरात सरकार और मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति अपनी सोच बदली है। एक ऐसे राजनीतिज्ञ, जिन्हें आजाद भारत के इतिहास में अनुचित तरीके से बदनाम करके उनकी छवि को खराब किया गया।

भाजपा के लिए यह सब शगुन साबित हुआ।

और इन सब बातों ने मुझे यकीन दिलाया कि देश के राजनैतिक माहौल को निर्णायक तरीके से कांग्रेस से भाजपा के नेतृत्व वाले विकल्प के पक्ष में बदला जा सकता है।

आइए हम आने वाले महीनों में इस दिशा में अधिक निर्णायक तरीके से आगे बढ़ें।

आइए भारत की जनता को एक कड़ा और विश्वसनीय संदेश दें कि भाजपा अपना काम करने में विफल रहे यूपीए के स्थान पर स्थिर, दूरदर्शितापूर्ण और बदलाव के विकल्प की उनकी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए खड़ी होने को तैयार है।

वंदे मातरम